॥ श्री गणेशाय नमः॥

शुक्र (भृगु)

शुक्र का स्वरूप :- दैत्यगुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि समान आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएँ फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। इनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है। वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः -दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वरदमुद्रा सुशोभित रहती है।

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। इन्होने भगवान् शंकर की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। शुक्राचार्य ने कठोर व्रत का अनुष्ठान कर शंकर को प्रसन्न कर लिया, शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे, तुम्हे कोई नहीं मार सकेगा। भगवान् शिव ने इन्हें धन का अदयक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये। शुक्रचाय औरषधियों, मन्त्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं।
इनहोंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी-जीवन ही स्वीकार किया।

अपराह्नबली, शीर्षोदय, विप्रवर्ण, ह्रस्व आकार, द्विपद स्वामी, स्त्री, सौम्यस्वभाव, कर्पूर-वर्ण, जलचर स्वामी, नागलोक स्वामी, कफ-प्रकृति, क्षार-स्वाद, पूर्व-मुख।

शुक्र ग्रह :- वृष और तुला राशि का स्वामी है, मीन के २७ अंश पर उच्च तथा कन्या के २७ अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि तुला है। महादशा २० की होती है। शुक्र २५ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

शुक्र ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से १, २, ३, ४, ५, ८, ९ और ११ वें स्थानों में शुभफलदायक तथा ६, १० व १२ वें स्थान में रोग-चिन्ता-शोकादि का कारक होता है।

शुक्रवार व्रत विधि :- शुक्रर के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद शुक्र स्तोत्र का पाठ करे एवं सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर दही भात का एक समय भोजन करे। सूर्यास्त के बाद अन्न जल ग्रहण न करे। शनिवार के दिन अरुणोदय काल में सूर्यार्घ्य देने के बाद व्रत का पारण गोग्रास देने के बाद ही करना चाहिए।

शुक्र की अनुकूलता के लिए गोपालन एवं गोपूजा करनी चाहिये।

दान पदार्थ :- श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत चित्र वस्त्र, श्वेत पुष्प, चाँदी, सोना, दही, चीनी, गौ, भूमि, सुगंध-द्रव्य, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- हीरा।

धारणार्थ औषधि :- मंजीष्ठा मूल।

देवता :- शुक्र ग्रह के अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं।

ध्यान :- मृणाल-कुन्देन्दु-पयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम्।
समस्तशास्त्रार्थनिधिं महान्तं ध्यायेत्कविं वाञ्छितमर्थसिद्धये॥
(दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्य साक्षसूत्रकमण्डलुः॥)

३० शुक्र यन्त्रम्

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ शुँ शुक्राय नमः। जपसंख्या १६,००० (११,०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्रायनमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ह्रीँ श्रीँ शुक्रायनमः।

शुक्र गायत्री :- ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मन्त्र :- हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- ॐ अन्नात्परिस्रुत इतिमन्त्रस्य पराशर ऋषिः शक्करी छन्दः शुक्रो देवता रसं ब्रह्मना इति बीजम् शुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ पराशरऋषये नमः शिरसि।
ॐ शक्करीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये।
ॐ रसं ब्रह्मना इति बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ शुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोग नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास [३]:- ॐ अन्नात्परिस्रुतो इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत् इति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्षत्रं य इति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सोमं प्रजापतिरित्यनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ऋतेनसत्यमिंद्रियंव्विपानꣳ शुक्रमंध सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं योमृतंमधु इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ अन्नात्परिस्रुतो हृदयाय नमः।
ॐ रसंब्रह्मणाव्यपिबत् शिरसे स्वाहा।
ॐ क्षत्रं यः शिखायै वषट्।
ॐ सोमंप्रजापतिरिति कवचाय हुम्।
ॐ ऋतेनसत्यमिंद्रियंव्विपानꣳ शुक्रमंध सो नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं योमृतंमधु इत्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥
॥ ॐ शुक्राय नमः॥

शुक्रस्तोत्रम्

शुक्रः काव्यः शुक्ररेता शुक्लाम्बरधरः सुधी। हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः॥ १॥
नीतिज्ञो नीतिकृत् नीतिमार्गगामी ग्रहाधिपः। उसना वेद-वेदाङ्ग-पारगः कविरात्मवित्॥ २॥
भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञानगम्यः सुतप्रदः। शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत्॥ ३॥
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मी वसतिमुत्तमाम्। विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति च॥ ४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शुक्रस्तोत्रम्

विनियोग-अस्य श्री शुक्रस्तोत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः शुक्रो देवता शुक्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ दैत्यदानवपूजित। वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्ते नमो नमः॥ १॥
देवयानिपितस्तुभ्यं वेद-वेदाङ्ग-पारगः। परेण तपसा शुद्धः शङ्करो लोकसुन्दरः॥ २॥
प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः। नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे॥ ३॥
तारामंडल-मध्यस्थ स्वभासाभासितांबर। यस्योदये जगत्सर्वं मङ्गलार्हं भवेदिह॥ ४॥
अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मङ्गलरूपिणे। त्रिपुरावासिनो दैत्यान् शिवबाणप्रपीडितान्॥ ५॥
विद्ययाऽजीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगुनन्दन। ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन॥ ६॥
बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः। भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वगीर्वाणवंदित॥ ७॥
जीवपुत्राय यो विद्या प्रादात्तस्मै नमो नमः। नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि॥ ८॥
नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने। स्तवराजमिदं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः॥ ९॥
यः पठेच्छ्रृणुयाद्वापि लभते वाञ्छितं फलं। पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियं॥ १०॥
राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रियमुत्तमां। भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः॥ ११॥
अन्यवारे तु होरायां पूजयेद्भृगुनन्दनम्। योगार्तो मुच्यते रोगाद्भयार्तो मुच्यते भयात्॥ १२॥
यद्यत्प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा। प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधिम्॥ १३॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामलोक्तं शुक्रस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

शुक्रकवचम्

विनियोग-अस्य श्रीशुक्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य भारद्वाज ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः शुक्रो देवता शुक्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

मृणाल-कुन्देन्दु-पयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम्।
समस्तशास्त्रार्थनिधिं महान्तं ध्यायेत्कविं वाञ्छितमर्थसिद्धये॥ १॥

ॐ शिरो मे भार्गवः पातु भालं पातु ग्रहाधिपः। नेत्रे दैत्यगुरूः पातु श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः॥ २॥
पातु मे नासिकां काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः। जिह्वा मे चोशनाः पातु कंठं श्रीकंठभक्तिमान्॥ ३॥
भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनोव्रजः। नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः॥ ४॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरू मे सुरपूजितः। जानु जाड्यहरः पातु जङ्घे ज्ञानवताम्बरः॥ ५॥
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वरांबरः। सर्वाण्यंगानि मे पातु स्वर्णमालापरिष्कृतः॥ ६॥
य इदं कवचम् दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः। न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः॥ ७॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे शुक्रकवचं सम्पूर्णम्॥

- -

[१] **विनियोग--** विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द "**विनियोगः**" बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को "**आचमनी**" कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ .... नमः शिरसि।

ॐ .... नमः मुखे।

ॐ .... नमः हृदये।

ॐ .... नमः गुह्ये।

ॐ .... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ....ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ....ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

[४] **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ .... हृदयाय नमः।

ॐ .... शिरसे स्वाहा।

ॐ .... शिखायै वषट्।

ॐ .... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ .... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ....ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)